संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

सीसीआरटी समाचार

CCRT Newsletter

खण्ड 2 • अंक 1 • जनवरी 2024

Volume 2 • Issue 1 • January, 2024

कला मंथन

सुंदर तथा उदात्त में क्या अंतर है, इस विषय को लेकर चर्चा प्रारंभ हुई, एक नए युग का आरंभ हुआ। अब तक की विचारधारा में सिर्फ 'सुंदर' शब्द अंतिम पारिभाषिक शब्द माना गया, किन्तु अब 'उदात्त' शब्द भी जोड़ा गया। इससे सौंदर्यशास्त्र का क्षेत्र विस्तृत हुआ। इसके पश्चात् 'चित्रमयता' शब्द को भी जोड़ा गया। किन्तु इसका महत्व धीरे-धीरे कम हुआ, क्योंकि सुंदरता कलावस्तु का भी मूलभूत गुण-विशेष है, इस विचारधारा को अस्वीकृत किया गया। इसे अवास्तव माना गया। संदर्भ के विषय में अब चर्चा कम हो गई। उदात्त का भी महत्व कम हो गया। अब 'प्रतिमा' शब्द पर चर्चा होने लगी। इसके पश्चात् 'अभिव्यक्ति' शब्द ने स्थान प्राप्त किया। इस पर सर्वप्रथम विचार एलिसन के 'इमेज ऑन द नेचर एण्ड प्रिंसिपल्स ऑफ टास्क' तथा कांट के 'क्रिटिक ऑफ जजमेंट' ग्रंथों में प्रकट हुआ। कांट ने 'अभिरुचि' शब्द को लेकर चर्चा की। उन्होंने कहा "प्रतिमाओं की अभिव्यक्ति केवल सुंदर अनुभूति में होती है"।

उन्नीसवी सदी का कला चिंतन कांट के विचारों से प्रभावित रहा। जर्मन दर्शनशास्त्री नीत्शे ने कहा, "आज तक कलाकार के विषय में कुछ भी नहीं कहा गया"। अब कलाकार को केन्द्र स्थान में माना गया। रोमांटिक कवि और बहिष्कृत चित्रकार इस विचारधारा के प्रतिनिधि बन गए। कलाकार के जीवन चरित्र में कला की सर्वोत्तम आलोचना मिलती है, यह धारणा निश्चित हुई। नए विद्वान कला विषयक और सौंदर्य विषयक चिंतन को व्यावहारिक न मानकर उसे दार्शनिक मानते हैं। इन कलाकारों ने कला को दार्शनिक ऊँचाई दी।

अठारहवीं सदी के मध्य के पूर्व 'एस्थेटिक' विषय पर चिंतन नहीं हुआ। इसी समय 'सौंदर्य दर्शन' (फिलॉसोफी ऑफ द ब्युटिफुल) शास्त्रीय जिज्ञासा का विषय बन गया। सही मायनों में इस तरह की विचार-परम्परा सॉक्रेटिस के पूर्व से शुरू है। इस समय भी कलाकृति के श्रेष्ठत्व के मापदण्ड तय किए गए थे। सॉक्रेटिस पूर्व ग्रीक साहित्य में इन बातों का जिक्र किया गया है। साहित्य और कला के विषय में मानवीय संवेदनाएं सदैव विकसित हुई हैं। प्राचीन कलाओं का महत्व कभी कम नहीं हुआ, बल्कि यह महत्व बढ़ता ही गया। सौंदर्य की अनुभूति और सौंदर्य चेतना के विकास के बारे में जब हम विचार करते हैं, तब हमें पुरातत्व शास्त्र की दृष्टि से मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाता है। किन्तु यह कार्य कठिन है, क्योंकि मूल्यांकन की दृष्टि से आवश्यक सामग्री हमारे पास नहीं होती। कला का इतिहास वास्तव में कला चेतना का इतिहास है। यह इतिहास ललित कलाओं के सौंदर्यशास्त्र संबंधी सिद्धातों को बोधगम्य रूप से स्पष्ट करता है। परंतु इतिहासकार कभी नहीं भूलता कि मानव-जीवन में सौंदर्य-चेतना का मूल्य क्या है। व्यवहार और चिंतन इन दोनों क्षेत्रों में हमें मूल्यों का विचार करना होगा। वस्तुतः सौदर्य - चेतना का इतिहास मानव समाज का सर्वाधिक स्थायी क्षेत्र है।

डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर
अध्यक्ष, सीसीआरटी

भारतीय संस्कृति

भारत में अलग-अलग भाषाओं, रहन-सहन, खान-पान, सामाजिक व धार्मिक मान्यताओं, व्यवस्थाओं के बावजूद पूरा देश एक संस्कृति के सूत्र से बंधा है। देश में व्यापक विविधता के होते हुए भी एकता की भावना अद्वितीय है। इसके अलावा पड़ोसी देशों और विदेशों से ऐतिहासिक घनिष्ठ संबंध के कारण यहां की संस्कृति में उनकी संस्कृति के तत्व भी मौजूद हैं। भारत की संस्कृति वाकई दूसरे देशों के लिए एक अनुपम उदाहरण है। हमारे यहां मनुष्य के ज्ञान और मानसिक पोषण के लिए विविध प्रकार के दर्शन और साहित्य मौजूद हैं। ज्ञान, विज्ञान, दर्शन और इतिहास के क्षेत्र में हमारा साहित्य भण्डार अतुल्य है। हैरानी की बात है कि भारत की सभ्यता और संस्कृति पर अनगिनत विदेशी आक्रमण हुए हैं, लेकिन आज भी इसकी खूबियां बरकरार हैं। समय के साथ हमारी संस्कृति में भी बदलाव आते रहे हैं, परंतु इसके मूल स्वरूप में बड़ा बदलाव नहीं आया है। उल्टे दिन-प्रतिदिन हमारी संस्कृति का काफी संवर्धन हो रहा है। अपने पूर्वजों से विरासत में हमें मिली हमारी संस्कृति वास्तव में एक अनमोल धरोहर है, जो युगों-युगों तक समूचे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करती रहेगी और स्वयं में फलती-फूलती रहेगी। अल्लामा इकबाल ने क्या खूब कहा भी है:

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमां हमारा।"

श्री ऋषि वशिष्ठ
निदेशक, सीसीआरटी

प्रमुख गतिविधियों की झलकियाँ

जनवरी 2024 की प्रमुख गतिविधियाँ

दिनांक 26 जनवरी 2024 को सीसीआरटी मुख्यालय, दिल्ली और हैदराबाद, गुवाहाटी, उदयपुर तथा दमोह स्थित इसके चार क्षेत्रीय केंद्रों में 75वाँ गणतंत्र दिवस समारोह पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सीसीआरटी के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ-साथ दिल्ली मुख्यालय और हैदराबाद तथा गुवाहाटी केंद्रों पर चल रहे अनुस्थापन पाठ्यक्रम/प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ भी राष्ट्रीय ध्वज फहराने के कार्यक्रम में शामिल हुईं।

प्रशिक्षण / TRAINING

- **कार्यशाला/WORKSHOP**

'स्कूली शिक्षा में शिल्प कौशल को एकीकृत करने पर कार्यशाला'

(03-12 जनवरी 2024 सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर)

इस कार्यशाला में 14 राज्यों - क्रमशः आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मणिपुर, मिजोरम, ओडिशा, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल से कुल 97 शिक्षक प्रतिभागियों (36 महिला शिक्षक सहित) ने भाग लिया।

इस व्यापक कार्यशाला का उद्देश्य पारंपरिक शिल्प कौशल को शामिल करके स्कूलों में सांस्कृतिक शिक्षा की भूमिका को बढ़ाना है। कार्यशाला में सांस्कृतिक शिक्षा में शिक्षकों के महत्व, भारतीय हस्तशिल्प पर सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव और भारतीय समाज में शिल्पकारों की भूमिका पर सत्र शामिल थे। प्रतिभागियों को विभिन्न पारंपरिक शिल्प, जैसे कि क्ले और पॉटरी, टाई और डाई, प्राकृतिक अपव्यय से बने खिलौने, बुकबाइंडिंग, मैक्रैम और पेपर बैग बनाने का प्रत्यक्ष प्रशिक्षण दिया गया।

टाई और डाई के कौशल को सीखते हुए शिक्षक-शिक्षिकाएँ

दैनिक कार्यक्रम में सैद्धांतिक चर्चाओं, व्यावहारिक शिल्प सीखने और स्रोत व्यक्तियों द्वारा व्यावहारिक वार्ता का मिश्रण शामिल रहा। भारतीय संस्कृति में क्षेत्रीय योगदान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए शिल्प के पुनरुद्धार पर जोर दिया गया। इसके अतिरिक्त कार्यशाला में संधारणीय पर्यावरण प्रचलनों के लिए शिल्प कौशल के एकीकरण, बुनियादी शिक्षा में गांधीवादी दर्शन, और भारत की शिल्प परंपराओं के विशेष संदर्भ के साथ शिक्षा के मूल्य पर विशेष जोर दिया गया।

छत्तीसगढ़ प्रतिभागी क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रस्तुति के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक झलक पेश करते हुए।

हस्तशिल्प संग्रहालय, भारतीय लोक कला मंडल, शिल्पग्राम, मोती मगरी, और अहर संग्रहालय में शैक्षिक यात्राओं ने प्रतिभागियों को सांस्कृतिक परिदृश्य की व्यावहारिक समझ प्रदान की। कार्यक्रम का समापन एक सिद्धि सामारोह (वेलेडिक्टरी) के साथ किया गया, जिसमें अंतिम मूल्यांकन, प्रतिभागियों द्वारा पाठ योजनाओं की प्रस्तुति और कार्यशाला के दौरान तैयार किए गए शिल्प उत्पादों, परियोजना कार्य और पाठ योजनाओं का प्रदर्शन शामिल रहा। रोचक और समृद्ध कार्यशाला ने स्कूली शिक्षा में शिल्प कौशल के गहन एकीकरण को सफलतापूर्वक बढ़ावा दिया, जो कि भारत भर में सांस्कृतिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सीसीआरटी की प्रतिबद्धता के अनुरूप संपन्न हुआ।

मिट्टी के बर्तनों का शिल्प: जहां कला का मिट्टी से संगम होता है

शिल्प कौशल सीखना

'प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में स्कूलों की भूमिका पर कार्यशाला'

(04–13 जनवरी 2024 सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह)

इस कार्यशाला में 10 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों – क्रमश: बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, ओडिशा, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल से कुल 65 शिक्षक प्रतिभागियों (09 महिला शिक्षकों सहित) ने भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को भारत की समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए ज्ञान और कौशल के साथ सशक्त बनाना था। कार्यशाला ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक कलाकृतियों को संरक्षित करने और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में स्कूलों की सक्रिय भागीदारी का अध्ययन करने पर केंद्रित रही। शिक्षकों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप सांस्कृतिक शिक्षा के महत्व पर चर्चा में भाग लिया और छात्रों को अपनी विरासत की सराहना करने और उनकी रक्षा करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से व्यावहारिक कार्य योजनाएं विकसित कीं।

कार्यशाला के उद्देश्यों में संरक्षण के नियमों का अध्ययन करना, विरासत संरक्षण में स्कूलों की भूमिका पर विचार करना और सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक परिसंपत्तियों को संरक्षित करने में विद्यार्थियों की भागीदारी के लिए सरल तकनीकों पर ज्ञान प्रदान करना शामिल था। व्यापक कार्यक्रम में जैव–सांस्कृतिक विविधता, टिकाऊ प्रबंधन प्रचलनों और वैश्वीकरण के प्रभाव जैसे विषयों पर व्याख्यान, संरक्षण गतिविधियाँ, संग्रहालय यात्राएं और चर्चाएँ शामिल थीं। भारतीय पुरातत्व सवेक्षण जैसे संगठनों के विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों की विरासत संरक्षण की समझ को समृद्ध करते हुए प्रत्यक्ष अनुभव साझा किए।

प्रतिभागी पारंपरिक शिल्प सीखने, माइम और मूवमेंट के माध्यम से संचार कौशल को बढ़ाने और संरक्षण पर मीडिया और वैश्वीकरण के प्रभाव पर चर्चा जैसे व्यावहारिक गतिविधियों में शामिल हुए। कार्यशाला में भारतीय संस्कृति में क्षेत्रीय योगदान के तत्वों को भी शामिल किया गया, जो प्रतिभागियों को अपने संबंधित राज्यों की अद्वितीय विरासत का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करते हैं।

राष्ट्रीय एकीकरण और जिम्मेदार नागरिकता की भावना को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता में सीसीआरटी की कार्यशाला ने भारत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों में गर्व और जिम्मेदारी की भावना पैदा करने के लिए ज्ञान और उपकरण ों से शिक्षकों को सफलतापूर्वक समृद्ध किया।

शिल्प के माध्यम से कौशल निर्माण

मध्य प्रदेश का लोक प्रदर्शन करते हुए प्रतिभागी

उपलब्धियां: श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, संस्कृति और पर्यटन राज्य मंत्री द्वारा प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए

महाराष्ट्र के प्रतिभागी अपनी क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए

'एनईपी–2020 के अनुरूप शिक्षा में कठपुतली की भूमिका पर कार्यशाला'

(18 जनवरी – 02 फरवरी 2024 सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) ने इस अवधि में अपने क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में 'शिक्षा में कठपुतली की भूमिका' पर एक समृद्ध कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में 11 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों – अरुणाचल प्रदेश, बिहार, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, महाराष्ट्र, ओडिशा और पुडुचेरी से 61 शिक्षक प्रतिभागियों (09 महिला शिक्षक सहित) ने भाग लिया। कार्यशाला ने एक प्रभावी साधन के रूप में कठपुतली की विविध और गतिशील भूमिका की गहन समझ प्रदान की और शिक्षा को उन्नत करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लिखित सिद्धांतों और उद्देश्यों के साथ रणनीतिक रूप से साधन प्रदान किया। कार्यक्रम में ऐसे अनेक तरीकों को सामने लाया गया, जिनमें कठपुतली एक समृद्ध और अधिक आकर्षक शैक्षिक अनुभव में योगदान कर सकती है और शिक्षकों को मूल्यवान अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक अनुप्रयोगों से रूबरू कराती है, जो इस अभिनव दृष्टिकोण को उनके शिक्षण विधियों में एकीकृत करते हैं।

16–दिवसीय इस कार्यशाला के दौरान, प्रतिभागियों को ध्यान से तैयार किए गए कार्यक्रम से लाभ हुआ जिसमें भारतीय संस्कृति में क्षेत्रीय योगदान, लैंगिक और मूल्य शिक्षा के महत्व और भारत में कठपुतली थिएटर परंपराओं के इतिहास और उत्पत्ति पर व्यावहारिक सत्र शामिल थे। व्यावहारिक पहलुओं, जैसे विभिन्न कठपुतली प्रकारों की तैयारी और उनमें बदलाव की खोज की गई तथा शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में कठपुतली को एकीकृत करने के अनुभव

से रूबरू कराया गया। कार्यशाला में सांस्कृतिक स्थलों पर शैक्षिक यात्राएं भी कराई गई, जिनमें कामाख्या मंदिर और असम राज्य संग्रहालय शामिल हैं, जिसमें प्रतिभागियों को एक समग्र सीखने का अनुभव प्राप्त हुआ।

कार्यशाला की परिणति सिद्धि समारोह (वैलेडिक्टरी) के रूप में हुई, जहां प्रतिभागियों ने अपनी कठपुतली प्रस्तुतियों को प्रदर्शित किया और कार्यक्रम के दौरान विकसित पाठ योजनाओं को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम से कार्यशाला का सफल समापन हुआ, जिसमें भाग लेने वाले शिक्षकों के समर्पण और रचनात्मकता के दर्शन हुए। सांस्कृतिक शिक्षा के लिए अभिनव दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए सीसीआरटी की प्रतिबद्धता पूरे कार्यशाला में स्पष्ट थी जो देश भर में सांस्कृतिक अधिगम को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में इसकी भूमिका को प्रबल करती है।

प्रतिभागी उंगली कठपुतली में अपने कौशल को निखारते हुए

असम के लोक नृत्य की दुनिया में विचरण

रचनात्मक कठपुतली के माध्यम से कहानी कहने की कला

प्रतिभागी कठपुतली के माध्यम से अपने अधिगम के परिणामों को प्रस्तुत करते हुए

- **एनईपी-2020 के अनुरूप 484वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम/484th ORIENTATION COURSE IN LINE WITH NEP 2020**

(16 जनवरी-06 फरवरी 2024 सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप अपना 484वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किया। इस पाठ्यक्रम में 13 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों - क्रमशः आंध्र प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और सिक्किम से कुल 71 शिक्षक (19 महिला शिक्षकों सहित) ने भाग लिया। सेवाकालीन शिक्षकों के लिए डिजाइन किया गया यह अनूठा प्रशिक्षण कार्यक्रम नई दिल्ली में सीसीआरटी मुख्यालय के परिसर में संपन्न हुआ। व्यापक कार्यक्रम में विषयों की एक बहुरंगी सारणी शामिल थी, जो कि सांस्कृतिक इतिहास, संचार कौशल, पारंपरिक कलाओं और शिक्षा में एनईपी-2020 सिफारिशों के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर चर्चा सहित प्रसिद्ध स्रोत व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत की गई थी।

राष्ट्रीय संग्रहालय में हड़प्पा घाटी सभ्यता की खोज करते हुए प्रतिभागी

डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर, अध्यक्ष, सीसीआरटी द्वारा 484 वें अनुस्थापन पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों को संबोधन

पाठ्यक्रम के दौरान तैयार की गई अपनी शैक्षिक और शिल्प सामग्री प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागी

प्रतिभागी प्रख्यात गुरु श्रीमती जयलक्ष्मी ईश्वर के मार्गदर्शन में भरत्नाट्यम की कला से रूबरू होते हुए

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी विभिन्न गतिविधियों में शामिल हुए, जैसे कि भारतीय भाषाओं में गाने सीखना, पारंपरिक कठपुतलियों को तैयार करना और मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत से रूबरू होना। कार्यक्रम में यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों, राष्ट्रीय संग्रहालय और नेशनल वार मेमोरियल के लिए शैक्षिक यात्रा जैसे अनुभवों से प्रतिभागियों को समृद्ध करना शामिल रहा, जो विरासत संरक्षण, नागरिक मूल्यों और अंत:विषय दृष्टिकोणों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। विशेष रूप से संचार कौशल को बढ़ाने, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और डिजिटल शिक्षाशास्त्र को एकीकृत करने के सत्रों ने आधुनिक शिक्षा में पारंपरिक कलाओं की समकालीन प्रासंगिकता को प्रदर्शित किया।

यह कार्यक्रम 6 फरवरी को संपन्न हुआ जहां प्रतिभागियों को अपने समूह परियोजना के कार्य, पाठ योजनाओं और शैक्षिक/शिल्प सामग्री को प्रदर्शित करने का अवसर मिला, जिनमें अनुस्थापन के दौरान प्राप्त ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर जोर दिया गया। 484 वें अनुस्थापन पाठ्यक्रम ने शिक्षा में संस्कृति की भूमिका पर चल रहे संवाद में योगदान करते हुए शैक्षणिक अंतर्दृष्टि के साथ सांस्कृतिक संवर्धन को सफलतापूर्वक समामेलित किया।

- **एनईपी-2020 के अनुरूप 485वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम/485th ORIENTATION COURSE IN LINE WITH NEP 2020**

(18 जनवरी-07 फरवरी, 2024 सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) ने हैदराबाद स्थित अपने क्षेत्रीय केंद्र में एनईपी-2020 के अनुरूप अपने 485 वें अनुस्थापन पाठ्यक्रम का आयोजन किया। इस पाठ्यक्रम में 10 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों - क्रमश: आंध्र प्रदेश, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, सिक्किम और तमिलनाडु से कुल 50 शिक्षक (16 महिला शिक्षक सहित) ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सांस्कृतिक इतिहास, प्रभावी संचार कौशल और शैक्षिक परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 के सिद्धांतों के व्यावहारिक कार्यान्वयन की गहन समझ सेवाकालीन शिक्षकों को प्रदान करना है। एक व्यापक दैनिक कार्यक्रम के साथ प्रतिभागियों को प्रसिद्ध स्रोत व्यक्तियों के साथ जोड़ा गया जिन्होंने कला की भूमिका, संग्रहालयों के महत्व और शिल्प परंपराओं की खोज जैसे विषयों से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

485 वें अनुस्थापन पाठ्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणाधीन प्रतिभागी

प्रतिभागियों को स्वच्छता प्रतिज्ञा

कार्यक्रम से प्रतिभागियों को एक व्यापक ऑन-कैंपस अनुभव प्राप्त हुआ, जिसमें व्यावहारिक सत्र शामिल थे, जहां प्रतिभागियों ने पारंपरिक कठपुतलियों को तैयार किया, यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की जानकारी ली और पुरातत्व और मूर्तिकला की बारीकियाँ समझीं। सालारजंग संग्रहालय और सांस्कृतिक प्रदर्शनों के शैक्षिक भ्रमण ने प्रतिभागियों के अनुभव को समृद्ध किया और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सांस्कृतिक शिक्षा के व्यावहारिक एकीकरण पर जोर दिया। यह कार्यक्रम सांस्कृतिक संवर्धन के साथ शिक्षकों को सशक्त बनाने के लिए एक समग्र और गहन अधिगम वातावरण तैयार करने के सीसीआरटी के उद्देश्य के अनुरूप है।

पूरे कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने श्री एम. वीरेंदर, डॉ. के.पी. राव और अन्य विशेषज्ञों के साथ सत्रों में सांस्कृतिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को जाना-समझा, जिनमें कला और संग्रहालयों की भूमिका से लेकर भारतीय संदर्भ में मूर्त और अमूर्त विरासत की समझ तक शामिल थी। सांस्कृतिक स्थलों पर व्यावहारिक गतिविधियों और यात्राओं ने सीखने के अनुभव को और समृद्ध किया, जिससे शिक्षकों को सांस्कृतिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से शिक्षण में शामिल करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि और कार्यप्रणाली प्राप्त हुई।

485 वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम शिक्षकों को सशक्त बनाने और शिक्षा के दायरे में एक समृद्ध सांस्कृतिक विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए सीसीआरटी की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है, जो एनईपी-2020 में उल्लिखित परिवर्तनकारी दृष्टि के अनुरूप है।

छात्रवृत्ति और अध्येतावृत्ति / SCHOLARSHIP AND FELLOWSHIP

- क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने के साथ-साथ छात्रवृत्ति धारकों के नवीकरण के लिए बैठक।
- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने और छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक का 08-09 जनवरी 2024 को इम्फाल में आयोजन किया। बैठक में विभिन्न क्षेत्रों के कुल 06 विशेषज्ञों को साक्षात्कार/परीक्षणों का संचालन करने के लिए जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने और छात्रवृत्ति धारकों के नवीकरण के लिए क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक का 09-10 जनवरी 2024 को भोपाल में आयोजन किया। इसमें विभिन्न क्षेत्रों के कुल 08 विशेषज्ञों को साक्षात्कार/परीक्षणों का संचालन करने के लिए जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने और छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक का 17-21 जनवरी 2024 तक पुणे में आयोजन किया। इसमें विभिन्न क्षेत्रों के कुल 14 विशेषज्ञों को साक्षात्कार/परीक्षणों का संचालन करने के लिए जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने और छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक का 22-24 जनवरी 2024 तक तिरुवनंतपुरम में आयोजन किया। इसमें विभिन्न क्षेत्रों के कुल 10 विशेषज्ञों को साक्षात्कार/परीक्षणों का संचालन करने के लिए एक जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम/EXTENSION SERVICES AND COMMUNITY FEEDBACK PROGRAMME (ESCFP)

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	सर्वोदय विद्यालय, झिलमिल, नई दिल्ली	09-11 जनवरी, 2024
2.	डॉ. भीम राव अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस, नंद नगरी, नई दिल्ली	09-11 जनवरी, 2024
3.	गवर्नमेंट बॉयज सीनियर सेकेंडरी स्कूल, उजवा, नई दिल्ली	09-11 जनवरी, 2024
4.	सर्वोदय विद्यालय, ककरोला, दिल्ली	27, 29 और 30 जनवरी, 2024
5.	सर्वोदय सह-शिक्षा विद्यालय, नजफगढ़, नई दिल्ली	29-31 जनवरी, 2024

क्षेत्रीय केन्द्र हैदराबाद

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	जेड.पी. हाई स्कूल, मंडल शमीरपेट, जिला मेडचल-मलकजगिरी, हैदराबाद, तेलंगाना	02-04 जनवरी, 2024
2.	केंद्रीय विद्यालय, पिकेट, सिकंदराबाद, हैदराबाद, तेलंगाना	08-10 जनवरी, 2024
3.	जेड.पी. हाई स्कूल, थुमुकुंटा, मंडल शमीरपेट, जिला, मेडचल-मलकजगिरी, तेलंगाना	09-11 जनवरी, 2024
4.	एम.पी. हाई स्कूल, तिरुमला नगर, मीरपेट, मंडल उप्पल, जिला मेडचल, तेलंगाना	19, 20 और 22 जनवरी, 2024
5.	मॉडल हाई स्कूल, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद-500007	23-25 जनवरी, 2024

क्षेत्रीय केन्द्र गुवाहाटी

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	पब गुवाहाटी हाई स्कूल, गुवाहाटी	24, 25 और 29 जनवरी, 2024
2.	हेमन्त बरुआ विद्यापीठ एम.ई. स्कूल, गुवाहाटी	25, 29 और 30 जनवरी, 2024

क्षेत्रीय केन्द्र दमोह:

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	राजकीय एकीकृत माध्यमिक विद्यालय, दमोह	29-31 जनवरी, 2024

जनवरी 2024 के महीने में सीसीआरटी मुख्यालय और इसके चार क्षेत्रीय केंद्रों में कुल 2589 बच्चों को विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया गया।

सांस्कृतिक क्लब

जनवरी 2024 के महीने में विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 24 सांस्कृतिक क्लब खोले गए।

स्वच्छता कार्य योजना

1. सीसीआरटी ने 22 जनवरी 2024 को सीसीआरटी परिसर नई दिल्ली के आसपास स्वच्छ भारत मिशन के तहत *श्रमदान* गतिविधि का आयोजन किया है जिसमें 192 कार्मिकों/शिक्षकों ने भाग लिया और क्षेत्र की सफाई की।
2. सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने 25, 27, 29, 30, 31 जनवरी 2024 को स्वच्छ भारत मिशन पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया है। कुल 61 शिक्षकों, 250 छात्रों, 20 सामुदायिक सदस्यों और 06 सीसीआरटी अधिकारियों ने व्याख्यान, कठपुतली शो, वेस्ट टू आर्ट और श्रमदान गतिविधियों में भाग लिया।

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली:

डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर, माननीय अध्यक्ष, सीसीआरटी
श्री ऋषि वशिष्ठ, निदेशक, सीसीआरटी
डॉ. राहुल कुमार, उप निदेशक, (प्रशिक्षण)
श्री राजेश भटनागर, उप निदेशक (वित्त)
डॉ. संदीप शर्मा, उपनिदेशक, (मूल्यांकन)
श्री दिबाकर दास, उप निदेशक, (छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति)
श्री के.एस.एल. गणेश, उपनिदेशक (प्रशासन)
श्री मनीष कुमार, हिन्दी अधिकारी

सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र:

श्री वाई. चन्द्र शेखर, परामर्शक
सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद, तेलंगाना

श्री ओम प्रकाश शर्मा, परामर्शक
सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर, राजस्थान

श्री निरंजन भुइयां, परामर्शक
सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, असम

श्री के.एस.एल. गणेश, उप. निदेशक (प्रशासन) एवं प्रभारी
सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत संस्थान)
15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली - 110075 भारत
दूरभाष : 011-25309300 ई-मेल : dir.ccrt@nic.in वेबसाइट : www.ccrtindia.gov.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
1-118/सीसीआरटी, सर्वे नं. 64
(गूगल ऑफिस के निकट),
मधापुर, हैदराबाद, तेलंगाना
पिन कोड:- 500 084
दूरभाष: +91+040+23111910/23117050
ई-मेल: rchyd.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
58, जुरीपार, पंजाबारी रोड
गुवाहाटी, असम
पिन कोड: 781037
दूरभाष: +91-0361-2335317
ई-मेल: rcgwt.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
हवाला खुर्द, बड़गाँव,
उदयपुर, राजस्थान
पिन कोड: 313011
दूरभाष: +91+0294-2430764
ई-मेल: rcud.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
पुरानी कलेक्ट्रेट बिल्डिंग,
दमोह, मध्य प्रदेश
पिन कोड:- 470661
ई-मेल: rcdamoh-ccrt@gov.in

@CCRTDelhi @ccrtofficialchannel ccrtnewdelhi @CCRTNewDelhi @ccrtofficial

संरक्षक: **डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर**, अध्यक्ष, सीसीआरटी *मार्गदर्शक:* **श्री ऋषि वशिष्ठ,** निदेशक, सीसीआरटी
संपादक: **मनीष कुमार**, हिंदी अधिकारी *प्रकाशन सहयोग:* **श्री रमनीक कुमार**, प्रकाशन सहायक एवं **श्री विरेन्द्र कुमार**, ग्राफ़िक डिज़ाइनर